प्रख्यापन

" श्री नरेश मेहता के नाट्यकाव्य : एक अनुशीलन "

यह शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्.फिल्. के लघु शोध-प्रबंध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय , कोल्हापुर या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

हस्ताक्षर

फलटण

दिनांक ६-१०-१९९१

श्री. तांबोळी सादिक बाबुलाल

अनुसंधाता

भूमिका

मुझे स्कूल के दिनों से ही काव्य के बारे में आकर्षण रहा है। बी.ए. तथा एम्.ए. का अध्ययन करते वक्त थोड़ी-बहुत आधुनिक हिंदी कवियों की जानकारी हो गयी थी। एम्.फिल. के लघुशोध प्रबंध का विषय-चयन करते समय आदरणीय डॉ.सुर्वेजी ने ' नाट्य-काव्य ' का सुझाव दिया। प्रा. डॉ. राजेंद्र शहा जो इस लघु शोध-प्रबंध के मार्गदर्शक हैं, उन्होंने श्री नरेश मेहता के नाट्य-काव्यों के बारे में मेरे मन में गहरी रूचि पैदा की। कविता और नाटक का समन्वय होनेवाले इन नाट्य-काव्यों को पढ़ने पर इसी विषय को चुनना मैंने पसंद किया।

श्री नरेश मेहता के नाट्य-काव्यों का विश्लेषण सात अध्यायों में विभाजित किया है। पहले अध्याय " **नाट्य-काव्य सैद्धांतिक विवेचन** " में नाट्य-काव्य का परिचय, परिभाषा, उसके तत्व और मिथक-बोध का सैद्धांतिक विवेचन होगा। दूसरे अध्याय " **नरेश मेहता के काव्य की अवधारणा और उनके नाट्य-काव्य** " में श्री नरेश मेहता का परिचय उनकी विभिन्न कृतियों के प्रेरणास्त्रोत और नाट्य-काव्य की चर्चा की जायेगी। तीसरे अध्याय " **नरेश मेहता के नाट्य-काव्यों का वस्तु-विधान** " में प्रस्तुत कृतियों के कथावस्तु की चर्चा होगी। " **नरेश मेहता के नाट्य-काव्यों में पात्र परिकल्पना** " इस चौथे अध्याय में नाट्य-काव्य के तत्वों के अनुसार श्री नरेश मेहता की प्रस्तुत कृतियों के चरित्र-चित्रण की चर्चा की जायेगी। पाँचवे अध्याय " **नरेश मेहता के नाट्य-काव्यों का शिल्पविधान** " में प्रस्तुत नाट्य-काव्यों के शिल्प की चर्चा होगी। " **नरेश मेहता के नाट्य-काव्यों में रंगमंचीयता** " इस छटे अध्याय में नरेश मेहता के नाट्य-काव्यों की रंगमंचीयता की दृष्टि से चर्चा की जायेगी। " **समन्वित अनुशीलन** " इस सातवे अध्याय में पहले अध्याय से लेकर छठे अध्याय तक किये गये विवेचन के आधार पर निष्कर्ष प्रस्तुत किया जायेगा।

प्रा. डॉ. राजेंद्र शहा जो इस लघु शोध-प्रबंध के निर्देशक हैं, आप की कार्यतत्परता और मौलिक मार्गदर्शन ही मुझे यह लघु शोध-प्रबंध लिखने और पूरा करने की प्रेरणा देता रहा। आप ने अत्यंत व्यस्त रहने पर भी इस कृति का एक-एक पृष्ठ देखा पढ़ा और सुधारा। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की समस्त अच्छाइयों और उपलब्धियों का पूरा श्रेय पूज्यवर डॉ. राजेंद्र शहा को है। समझ में नहीं आता कि उनके सुयोग्य पथ प्रदर्शन के लिये कृतज्ञता किन शब्दों में व्यक्त की जाय ?

विषय चयन, सामग्री संकलन तथा बार-बार इस विषय की चर्चा के द्वारा मुझे प्रेरित करनेवाले आदरणीय डॉ. गजानन सुर्वेजी की सहायता बगैर इस लघु शोध-प्रबंध का काम मुझ जैसे आलसी व्यक्ति के हाथों असंभव था। इसी प्रकार प्रा. टी.आर.पाटील और प्रा. एस्.डी.आढ़ाव भी मुझे हमेशा प्रोत्साहन

देते रहे हैं, उनके प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ। " एल.बी.एस्. कॉलेज, सातारा " के प्राचार्य अमरसिंह राणे सर और ग्रंथालय कर्मचारीयों की सहायता के लिये भी मैं उनका ऋणी हूँ। इसी प्रकार एस्.टी. डेपो के मेरे मित्रों द्वारा दी गयी सुविधाओं के लिये आभार प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ। इस लघु शोध-प्रबंध के टंकलेखन और सुयोग्य प्रस्तुती के लिये सौ. शोभना खिरे, क्वालिटी सायक्लोस्टायलिंग, सातारा ने जो कष्ट उठाये हैं उनके प्रति भी मैं आभार प्रकट करता हूँ।

विविध प्रयत्नों के बावजूद भी इस लघु शोध-प्रबंध में कुछ त्रुटियाँ रह जाना संभव है। निर्दोषिता का दावा तो मैं नहीं कर सकता। फिर भी यदि सहृदय पाठकों को श्री नरेश मेहता के नाट्य-काव्यों का परिचय देकर उनका रसास्वादन कराने में मुझे किंचित मात्र भी सफलता मिली तो मैं अपने परिश्रम को सार्थक समझूँगा।

अनुक्रमणिका

अध्याय 1 : " नाट्य-काव्य : सैद्धांतिक विवेचन " 1 - 20

(1) नाट्य-काव्य : परिभाषा और परिचय। (2) नाट्य-काव्य के तत्त्व। 1) कथावस्तु। 2) पात्र और चरित्र-चित्रण। 3) संवाद। 4) शिल्पविधान। अ) बिंब, ब) प्रतीक, क) अलंकार, ड) लय तथा तुक। 5) अभिनेयता। 6) उद्देश्य। (3) नाट्य-काव्य का विधागत वैशिष्ट्य। (4) मिथक-बोध (5) नाटक और नाट्य-काव्य में साम्य-भेद।

अध्याय 2 : " नरेश मेहता के काव्य की अवधारणा और उनके नाट्य-काव्य " 21 - 50

(1) श्री नरेश मेहता का परिचय। (2) दूसरा सप्तक। (3) बन पाखी सुनो। (4) बोलने दो चीड़ को। (5) मेरा समर्पित एकांत। (6) संशय की एक रात। (7) महाप्रस्थान। (8) शबरी। (9) प्रवाद-पर्व। (10) उत्सवा। (11) प्रार्थना-पुरूष। (12) अरण्या। (13) पिछले दिनों नंगे पैरों। (14) देखना एक दिन। (15) तुम मेरा मौन हो। (16) आखिर समुद्र से तात्पर्य। समापन।

अध्याय 3 : " नरेश मेहता के नाट्य-काव्यों का वस्तुविधान " 51 - 84

(1) संशय की एक रात। अ) प्रेरणास्त्रोत, ब) साँझ का विस्तार और बालु तट, क) वर्षा भीगे अंधकार का आगमन, ड) मध्यरात्रि की मंत्रणा और निर्णय, इ) संदिग्ध मन का संकल्प और सवेरा। (2) महाप्रस्थान। अ) प्रेरणास्त्रोत, ब) यात्रा पर्व, क) स्वाहा पर्व, ड) स्वर्ग पर्व। (3) शबरी। अ) प्रेरणास्त्रोत, ब) त्रेता, क) पंपासर, ड) तपस्या, इ) परिक्षा, ई) दर्शन। (4) प्रवाद-पर्व। अ) प्रेरणास्त्रोत, ब) इतिहास और प्रतिइतिहास, क) प्रतिइतिहास और तंत्र, ड) शक्ति एक संबंध एक साक्षात, इ) प्रतिइतिहास और निर्णय, ई) निर्वेद-विदा। (5) मिथक कथा।

अध्याय 4 : " नरेश मेहता के नाट्य-काव्यों में पात्र परिकल्पना " 85 - 109

(1) संशय की एक रात। 1) राम, 2) लक्ष्मण, 3) हनुमान, 4) बिभीषण, 5) छाया, 6) गौण पात्र। (2) महाप्रस्थान। 1) युधिष्ठिर, 2) भीम, 3) अर्जुन, 4) नकुल-सहदेव, 5) द्रौपदी, 6) गौण पात्र। (3) शबरी 1) शबरी, 2) मतंग ऋषि, 3) राम, 4) गौण पात्र। (4) प्रवाद-पर्व। 1) राम, 2) सीता, 3) लक्ष्मण, 4) अनाम धोबी, 5) गौण पात्र। (5) मिथक पात्र।

अध्याय 5 : " नरेश मेहता के नाट्य-काव्यों का शिल्पविधान " 110 - 144

(1) भाषा। (2) बिंब विधान। (3) प्रतीक योजना। (4) अलंकार योजना। (5) लय और तुक। (6) समारोप।

अध्याय 6 : " नरेश मेहता के नाट्य-काव्यों में रंगमंचीयता " 145 - 164

प्रस्तावना। (1) कथावस्तु। (2) पात्र-योजना। (3) भाषा और संवाद। (4) दृश्य-विधान। (5) प्रकाश-व्यवस्था। (6) ध्वनि तथा संगीत योजना। (7) वेशभूषा-रंगभूषा। (8) अभिनेता। समारोप।

अध्याय 7 : " समन्वित अनुशीलन " 165 - 173